अनमोल वचन

जहाँ प्रयत्नों की ऊँचाई अधिक हो वहाँ नसीब को भी झुकना पड़ता है

विश्वनाथ समाचार

RNI No. MPHIN/25/A4357

'जनता की सोच — जनहित की खोज'

vishwanathsamachar@gmail.com

वर्ष 01 अंक :- डिजिटल अंक | इंदौर, रविवार 18 अक्टूबर 2026 | पृष्ठ 2, मूल्य 5 रुपया

देपालपुर में भक्ति का ऐसा महासंगम, जिसने जगा दीं नवरात्रि की सुनहरी यादें!

अनुराधा पौडवाल के मधुर स्वरों से गूंजा मां का दरबार, कैलाश विजयवर्गीय ने भी भजनों की प्रस्तुति देकर बांधा समां





















चिंटू वर्मा की 31 वर्षों की परंपरा ने फिर रचा भक्ति का इतिहास, कविता पौडवाल और गजेंद्र प्रताप सिंह के भजनों पर झूमे श्रद्धालु, बारिश भी नहीं डिगा सकी आस्था; देर रात तक उमड़ा जनसैलाब

देपालपुर (संदीप सेन)। कुछ आवाजें केवल कानों तक नहीं पहुंचतीं, वे सीधे हृदय में उतर जाती हैं। कुछ भजन केवल गाए नहीं जाते, बल्कि पीढ़ियों की स्मृतियों में हमेशा के लिए बस जाते हैं। मां दुर्गा की आराधना के साथ कभी रेडियो और टेलीविजन पर गूंजने वाले वे अमर देवी गीत, जिनकी धुन सुनते ही घर-घर में नवरात्रि का उल्लास छा जाता था, जिनके स्वरों के साथ माता की चौकी सजती थी और जिनकी मधुरता में श्रद्धा, संस्कार और परिवार की आत्मीयता घुली रहती थी। देपालपुर में शनिवार को आयोजित शारदीय नवरात्रि की भव्य भजन संध्या ने उन्हीं सुनहरी यादों को एक बार फिर जीवंत कर दिया। भाजपा जिला अध्यक्ष चिंटू वर्मा द्वारा देपालपुर के देवी माता मंदिर परिसर में आयोजित इस भव्य आयोजन में विश्व प्रसिद्ध भजन सम्राज्ञी अनुराधा पौडवाल, उनकी सुपुत्री एवं प्रसिद्ध गायिका कविता पौडवाल, देश के जाने-माने भजन गायक गजेंद्र प्रताप सिंह और वरिष्ठ भाजपा नेता कैलाश विजयवर्गीय की भजन प्रस्तुतियों ने ऐसा भक्तिमय वातावरण बनाया कि पूरा परिसर माता की आराधना में लीन हो गया। कैलाश विजयवर्गीय ने भी भजनों की प्रस्तुति देकर श्रद्धालुओं के बीच भक्ति का उत्साह बढ़ाया। हजारों श्रद्धालुओं की मौजूदगी, माता के जयकारे, भजनों पर झूमते भक्त और देर रात तक कार्यक्रम स्थल पर बना रहा उत्साह यह दृश्य किसी सामान्य सांस्कृतिक आयोजन का नहीं, बल्कि उस आस्था का था, जो पीढ़ियों को जोड़ती है और मनुष्य को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से परिचित कराती है।

जब अनुराधा पौडवाल के स्वरों में लौटीं नवरात्रि की पुरानी यादें

आज के आधुनिक संगीत और बदलते मनोरंजन के दौर में पुराने भक्ति गीतों की वह आत्मीयता कहीं पीछे छूटती दिखाई देती है। लेकिन देपालपुर की इस भजन संध्या ने साबित कर दिया कि सच्चे भजनों की मिठास कभी पुरानी नहीं होती। शनिवार रात करीब 11 बजे जैसे ही विश्व प्रसिद्ध भजन सम्राज्ञी अनुराधा पौडवाल और उनकी सुपुत्री कविता पौडवाल ने अपनी प्रस्तुतियां आरंभ कीं, श्रद्धालुओं का उत्साह देखते ही बनता था। माता के दरबार में उपस्थित महिलाएं और युवतियां भजनों की मधुर धुनों पर गरबा करने लगीं। हाथ जोड़कर मां से प्रार्थना करते श्रद्धालु, भक्ति में डूबे चेहरे और जय माता दी के गगनभेदी जयकारे वातावरण को अलौकिक बना रहे थे। अनुराधा पौडवाल की आवाज ने उन दिनों की याद ताजा कर दी, जब नवरात्रि आते ही टेलीविजन पर देवी गीतों की गूंज सुनाई देती थी। परिवार के लोग एक साथ बैठकर भजन सुनते थे और हर घर में मां की आराधना का विशेष वातावरण बन जाता था। उनकी प्रस्तुति ने मानो समय के पहिए को कुछ पल के लिए पीछे घुमा दिया। पुराने दौर के भक्ति संगीत से भावनात्मक जुड़ाव रखने वाले श्रद्धालुओं के लिए यह केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि अपनी स्मृतियों को फिर से जीने का अवसर था। कविता पौडवाल की प्रस्तुति ने भी कार्यक्रम की गरिमा और आकर्षण को बढ़ाया।











बारिश की चुनौती भी नहीं रोक सकी श्रद्धालुओं के कदम

देपालपुर में भजन संध्या शुरू होने से लगभग चार घंटे पहले जोरदार बारिश हुई। ऐसे में खुले आयोजन की व्यवस्थाओं और श्रद्धालुओं की सुविधाओं को लेकर चुनौतियां सामने आना स्वाभाविक था। बारिश के कारण कार्यक्रम प्रभावित होने की आशंका भी थी, लेकिन आयोजन की व्यापक तैयारियों ने श्रद्धालुओं के उत्साह को कम नहीं होने दिया। बैठने की व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए जमीन पर पहले से प्लाई बोर्ड लगाए गए थे, ताकि बारिश के बाद भी लोगों को बैठने में यथासंभव सुविधा मिल सके। यह व्यवस्था इस बात का उदाहरण बनी कि बड़े धार्मिक आयोजनों में केवल मंच, रोशनी और कलाकारों की व्यवस्था पर्याप्त नहीं होती, बल्कि वहां पहुंचने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा का ध्यान रखना भी उतना ही जरूरी है। बारिश के बाद भी लोगों का कार्यक्रम स्थल पर पहुंचना और देर रात तक डटे रहना उनकी आस्था और आयोजन के प्रति उत्साह को दर्शाता है। मौसम की चुनौती के बावजूद भक्ति का वातावरण बना रहा और मां के जयकारे गूंजते रहे। इस पूरे घटनाक्रम में आयोजकों की तैयारी, व्यवस्थाओं के प्रति सजगता और टीम के सामूहिक प्रयासों की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

चिंटू वर्मा की सहज छवि और टीमवर्क ने बढ़ाई आयोजन की सफलता

किसी बड़े आयोजन को सफल बनाने के लिए संसाधनों के साथ दूरदर्शिता, समन्वय और लोगों के साथ जुड़ाव भी आवश्यक होता है। चिंटू वर्मा की सहज छवि और समर्थकों तथा भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ उनका जुड़ाव आयोजन के दौरान दिखाई दिया। लगातार बढ़ती लोकप्रियता के बीच उनकी पहचान एक ऐसे आयोजक के रूप में उभरती है, जो वर्षों से चली आ रही धार्मिक परंपरा को निरंतरता देने के साथ उसे व्यापक जनभागीदारी से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति और देर रात तक बना उत्साह इस आयोजन की व्यापक पहुंच को दर्शाता है। कार्यक्रम की सफलता ने एक बार फिर यह स्पष्ट किया कि जब आस्था के साथ अच्छी तैयारी और सामूहिक सहयोग जुड़ता है, तो आयोजन लोगों के दिलों में विशेष स्थान बना लेता है।

पर्दे के पीछे की मेहनत ने सजाया माता का दरबार

किसी भी बड़े आयोजन के पीछे अनेक ऐसे चेहरे होते हैं, जो मंच की चमक से दूर रहकर व्यवस्थाओं को आकार देते हैं। कार्यक्रम की सफलता में चिंटू वर्मा की विश्वसनीय टीम की लगन, मेहनत और समन्वय भी महत्वपूर्ण रहा। इस आयोजन में पीथमपुर के महेश बैरागी, पार्षद रवि चौरसिया, सोमिल माली, राजेश बामोत्रीय, संजय मारू, विनोद ठाकुर, ओमपुरी, दिनेश जाट, लोकेन्द्र माली, जीतू राठौर, अंकित चौधरी, अनिल कुमावत और पीयूष विजयवर्गीय सहित अन्य सहयोगियों की सक्रिय उपस्थिति रही। बड़े धार्मिक आयोजन में व्यवस्थाओं को सुचारु बनाए रखने के लिए अनेक स्तरों पर जिम्मेदारियां निभानी पड़ती हैं। श्रद्धालुओं की सुविधा, कार्यक्रम का समन्वय और अन्य व्यवस्थाओं में सहयोग देने वाले कार्यकर्ताओं की मेहनत ही आयोजन को व्यवस्थित स्वरूप प्रदान करती है। टीम के सामूहिक प्रयासों ने कार्यक्रम की सफलता में अहम योगदान दिया।

देपालपुर की यह भजन संध्या केवल प्रसिद्ध कलाकारों की प्रस्तुतियों या हजारों लोगों की भीड़ तक सीमित नहीं रही। इसने पुरानी पीढ़ी की स्मृतियों और नई पीढ़ी के उत्साह को एक साथ जोड़ने का काम किया। अनुराधा पौडवाल के मधुर स्वर, कविता पौडवाल की प्रस्तुति, गजेंद्र प्रताप सिंह के स्वरचित भजन और कैलाश विजयवर्गीय की भजन प्रस्तुति ने मां की आराधना को एक सामूहिक उत्सव का स्वरूप दिया। बारिश के बावजूद श्रद्धालुओं की मौजूदगी और देर रात तक बना रहा भक्ति का वातावरण आयोजन की विशेष उपलब्धि रहा। किसी के लिए यह अपने प्रिय भजनों को सुनने का अवसर था, किसी के लिए मां के चरणों में प्रार्थना करने का विशेष क्षण और किसी के लिए परिवार तथा समाज के साथ भक्ति में डूबने का अनुभव। यही किसी धार्मिक आयोजन की वास्तविक सफलता है जब लोग केवल कार्यक्रम देखने नहीं, बल्कि उससे भावनात्मक रूप से जुड़ने पहुंचते हैं। चिंटू वर्मा की 31 वर्षों से चली आ रही परंपरा, प्रसिद्ध कलाकारों की प्रस्तुतियां, कैलाश विजयवर्गीय की सहभागिता, बारिश के बीच व्यवस्थाओं का निर्वहन और हजारों श्रद्धालुओं की भागीदारी ने इस आयोजन को यादगार बना दिया। मां के भजनों में एक ऐसी शक्ति होती है, जो बीते हुए समय की यादों को वर्तमान में जीवंत कर देती है। देपालपुर की इस भजन संध्या में भी वही अनुभूति देखने को मिली।